प्रेम और सौन्दर्य

कवि परिचय :

घनानन्द

घनानंद का जन्म संवत् 1746 में हुआ था। ये दिल्ली नरेश मुहम्मद शाह के दरबार में रहते थे। दिल्ली दरबार से अलग होने पर इनकी प्रेमिका सुजान ने इनकी उपेक्षा की। घनानंद दिल्ली छोड़कर वृन्दावन आ गए। यहाँ भी सुजान के प्रति प्रेम को भुला नहीं पाए, सुजान के प्रति यह लौकिक प्रेम अलौकिक प्रेम में बदल गया। घनानन्द 'सुजान' शब्द का प्रयोग श्रीकृष्ण के लिए करने लगे और इसी से प्रेरित हो, रात-दिन श्रीकृष्ण की छवि और लीला का वर्णन करने लगे। इनकी मृत्यु के विषय में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं, संवत् 1796 में इनकी मृत्यु मानी जाती है। घनानन्द कवित्त, कवित्त संग्रह, सुजान-विनोद, सुजान हित, वियोग-बेलि, आनन्दघन जू, इश्क लता, प्रीतिपावस, जमुनाजल और वृन्दावन सत आदि इनकी रचनाएँ हैं। घनानन्द ने अपनी रचनाओं में प्रेमोन्माद से परिपूर्ण चित्र और भाव उकेरे हैं। अपनी रचनाओं में श्रीकृष्ण के अलौकिक आलम्बन को आपने ग्रहण किया है। वस्तुतः उनका प्रमुख उद्देश्य भक्ति में लीन रहकर प्रेम की पीर प्रगट करना था। उनकी कविता में प्रेम और भक्ति का मिश्रण है। लौकिक प्रेम का स्वर अधिक मुखर होने से वियोग शृंगार प्रमुख हो गया है। घनानन्द के काव्य की भाषा मधुर, सरस ब्रज भाषा है। घनानन्द का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। उनकी भाषा में स्निग्धता और सरसता तथा प्रभावोत्पादकता है। कवित्त और सवैया छंद अपनाते हुए आपने अपने भावों की मधुर व्यंजना की है। घनानन्द के काव्य में अलंकार भी स्वाभाविक रूप से आए हैं। कहीं अनुप्रास की छटा है तो कहीं विरोधाभास अलंकार है। इनका उक्ति-वैचित्र्य और वचन-वक्रता काव्य की अमूल्य धरोहर है।

प्रेम का भाव संसार को सुखद और स्पृहणीय बनाने वाला है। प्रेम के अंतर्गत उन उच्च मानवीय भावों की परिगणना की जा सकती है जो संपूर्ण सृष्टि से मनुष्य के रागात्मक संबंधों की स्थापना में सहयोग करते हैं। प्रेम अनुभूति का विषय है। इस अनुभूति का विस्तार मानवेतर प्राणियों में भी परिलक्षित होता है। प्रेम में पारस्परिक आकर्षण की भावना विद्यमान रहती है, इसलिए मिलन की आतुरता के साथ मिलन की अनुरंजक स्थितियों का वर्णन प्रेम की तीव्रता का द्योतक है। इसी क्रम में प्रेम के ही अंतर्गत विरह की स्थितियों का वर्णन प्रेम की गहनता और प्रेम की एकनिष्ठता को व्यंजित करने वाला है। सौंदर्य प्रेम की आधारभूमि है। इसलिए प्रेम के क्षेत्र में रूप सौंदर्य, चेष्टा सौंदर्य और शील सौंदर्य का अपना महत्व है। एक तरह से सौंदर्य की ये तीनों कोटियाँ प्रेम के उत्तरोत्तर विकास में अपनी भूमिका निभाती हैं। साहित्य के अंतर्गत प्रेम और सौंदर्य की सघन अनुभूतियाँ शृंगार रस के वर्णन में व्यक्त हुई है। हिन्दी साहित्य में शृंगार वर्णन की सुदीर्घ परंपरा है। रीतिकाल में तो प्रेम और सौंदर्य केन्द्रीय-भाव के रूप में प्रतिष्ठित तत्व है। आधुनिक काल में भी मानवीय चेतना के इस समृद्ध पक्ष को कवियों ने अपनी रचनात्मक अनुभूतियों के रूप में प्रस्तुत किया है।

रीतिकाल के विशिष्ट कवि घनानंद प्रेम और सौंदर्य के अप्रतिम कवि माने जाते हैं। एक ओर वे प्रेम की अनुभूति की गहराई और समानता के कुशल कवि हैं तो दूसरी ओर वे सौंदर्य के भावुक और चतुर कवि हैं। संगृहीत कविताओं में घनानंद की अपने प्रिय सुजान के प्रति व्यक्त भावपूर्ण प्रणय अभिव्यक्तियों का प्रकाशन हुआ है। उनका प्रणय लौकिक से अलौकिक मनोभूमि तक की यात्रा करने वाला है, इसलिए कृष्ण ही उनके प्रणय केन्द्र बन जाते हैं। कृष्ण के सौन्दर्य पर रीझने वाली आँखें दिन-रात कृष्ण वियोग में ही डूबी रहती हैं। प्रेम की एक पक्षीय तीव्रता का सुंदर चित्रण घनानंद ने किया है। इसलिए प्रेम की अवहेलना के परिणामस्वरूप उत्पन्न आत्म-पीड़ा का बखान उनके काव्य की मूल विशेषता है। घनानंद ने प्रेम की जिजीविषा मूलक आसक्ति को ही जीवन मूल्य कहा है, प्रेम को वे सहज स्वाभाविक मानते हैं, प्रेम में चतुराई का कोई स्थान नहीं है। कपट का तो प्रेम के क्षेत्र में लेशमात्र स्थान नहीं है। सौंदर्य के भाव-मय रूपों मुख,

नेत्र, हँसी आदि का मोहक चित्रण करते हुए घनानंद ने क्षण-क्षण परिवर्तित सुंदरता का श्रेष्ठ चित्रण किया है।

रीतिकाल में देव का सौंदर्य वर्णन अद्वितीय है। प्रस्तुत पदों में उन्होंने रूप-सौन्दर्य और मिलन चेष्टाओं का भावुक चित्रण किया है। कृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उनको संसार रूपी घर में प्रज्ज्वलित दीपक के रूप में अनुभव किया है। राधा और कृष्ण के मिलन की चेष्टाओं की चर्चा करते हुए उन्होंने प्रेम में व्याकुल प्रिय-प्रेमी की एकनिष्ठता का विदग्ध वर्णन किया है।

घनानन्द माधुरी

1.

भोर ते साँझ लौं कानन ओर निहारति बावरी नेकु न हारति।
साँझ तैं भोर लौं तारनि ताकिबो तारनि सों इकतार न टारति।
जौ कहूँ भावतो दीठि परै घनआनंद आँसुनि औसर गारति।
मोहन-सोहन जोहन की लगियै रहै आँखिन के उर आरति॥

2.

मीत सुजान अनीति करौं जिन-हा न हूजियै मोहि अमोही।
दीठि कौं और कहूँ नहिं ठौर, फिरी दृग रावरे रूप की दोही।
एक बिसास की टेक गहें लगि आस रहै बसि प्रान-बटोही।
हौ घनआनंद जीवनमूल दई, कति प्यासनि मारत मोही ॥

3.

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे निसांक नहीं।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौ पाटी पढ़े हो लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

4.

झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै।
हँसि बोलनि में छबि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जल जावलि द्वै।
अंग-अंग तरंग उठै दूति की, परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै ॥ ॥

कवि परिचय :

देवदत्त

कवि देव का जन्म उत्तरप्रदेश के इटावा नगर में संवत् 1730 में हुआ। बचपन से ही देव कविता करने लगे थे। बड़े होने पर देव अपने आश्रय दाता के साथ जीवन भर भटकते रहे और उन्हें प्रसन्न करने के लिए कविता लिखते रहे। इनका पूरा नाम देवदत्त था परन्तु साहित्य जगत में देव नाम से प्रसिद्ध हुए। इनकी मृत्यु संवत् 1824 में हुई।

देव की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- भाव विलास, भवानी विलास, कुशल विलास, रस विलास, सुख सागर तरंग, वैराग्य शतक आदि।

देव मूलतः श्रृंगार के कवि हैं। यही कारण है कि इनकी रचनाओं में प्रेम का निरूपण अधिक हुआ है। प्रेम से सराबोर कविताएँ भाव विह्लता और भाव विलासता के कारण सुन्दर व सहज बन गई हैं। उनके काव्य में कहीं-कहीं उनकी वैराग्य वृत्ति भी है। प्रकृति का मानवीकरण करते हुए देव ने सहज, सरस शब्दावली का प्रयोग किया है। यथा - डार-द्रुम पलना, बिछौना नवपल्लव के,... पूरित पराग सौं उतारौ करै राई-लोन, कंजकली-नायिका लतानि सिर सारी दै। यहाँ प्रकृति और वात्सल्य का सुन्दर निरूपण करते हुए उनका प्रेम सौन्दर्य निखर पड़ता है।

देव की भाषा विशुद्ध ब्रज भाषा है। उन्होंने तत्सम्, तद्भव, बुन्देली, राजस्थानी, अरबी, फारसी शब्दों का बहुलता से प्रयोग किया है। छंद चयन में दोहा, सवैया और कवित्त छंद अपनाए हैं।

रीतिकाल के कवियों में देवदत्त का प्रमुख स्थान है।

देव सुधा

1.

पाँयनि नूपुर मंजु बजै, कटि किंकिन मैं धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लगै पट-पीत हिये हुलसै बनमाल सुहाई॥
माथे किरीट, बड़े दृग चंचल, मन्द हँसी मुख-चन्द-जुन्हाई।
जै जग-मन्दिर-दीपक सुन्दर श्रीब्रजदूलह 'देव' सहाई॥ ॥

2.

रीझि-रीझि रहिसि-रहसि हँस-हँसि उठैं,
साँसैं भरि आँसै भरि कहत 'दई-दई'।
चौंकि-चौंकि चकि-चकि, उचकि-उचकि 'देव'
चकि-जकि, बकि-बकि परत बई-बई॥
दोउन को रूप-गुन दोऊ बरनत फिरैं,
घर न थिरात, रीति नेह की नई-नई।
मोहि-मोहि मोहन को मन भयो राधा-मय,
राधा मन मोहि-मोहि मोहनमयी भई॥

3.

डार-द्रुम पलना, बिछौना नवपल्लव के,
सुमन झँगूला सोहै तन छवि भारी दै।
पवन झुलावै, केकी कीर बहरावै, 'देव',
कोकिल हलावै, हुलसावै करतारी दै॥
पूरित पराग सौं उतारौ करै राई-लोन,
कंजकली-नायिका लतानि सिर सारी दै।
मदन महीपजू को बालक बसंत, ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै॥

अभ्यास

बोध प्रश्न

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'सुजान अनीति करौ'- से कवि का क्या तात्पर्य है?
2. प्रेम के मार्ग के विषय में कवि का क्या मत है?
3. प्रिय के बोलने में कवि को किसकी वर्षा होती दिखाई देती है?
4. 'मोहन मयी' कौन हो गई है?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. कवि ने सुजान का नाम लेकर क्यों उलाहना दिया है?
2. कवि ने स्नेह के मार्ग को किस तरह का बताया है और क्यों?
3. दोउन को रूप-गुन दोऊ बरनत फिरैं की स्थिति में कौन-कौन हैं और क्यों?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. घनानंद की विरह वेदना को अपने शब्दों में लिखिए।
2. घनानंद के प्रिय के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।
3. श्रीकृष्ण की बाल छवि का वर्णन कीजिए।
4. राधा और श्रीकृष्ण के संयोग की स्थिति में उनके हाव-भावों का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।
5. निम्नलिखित काव्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए

अ- **''झलकैं अति सुन्दर आनन गौर, छकै दृग राजत काननि छ्वै।**
हँसि बोलनि में छवि-फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै।''

ब- **''साँझ ते भौर लौं तारनि ताकिबो, तारनि सौं इकतार न टारति।**
जौ कहूँ भावतो दीठि परै घनआनंद आँसुनि औसर गारति।''

स - **''अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।**
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे निसांक नहीं।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरों आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥''

काव्य सौन्दर्य

1. घनानंद के छंदों की भाषागत विशेषताएँ लिखिए।

आइए सीखे-

1. काली **घटा** का घमण्ड **घटा**।
2. माला फेरत जुग गया, गया न **मनका** फेर।
   करका **मनका** डारिकें, **मनका मनका** फेर॥

ध्यान दीजिए :- प्रथम उदाहारण में घटा शब्द दो बार आया है, किन्तु दोनों स्थान पर उसका भिन्न अर्थ है-

घटा - काले बादलों का समूह, **घटा** - कम होना

दूसरे उदाहरण में 'मनका' शब्द दो बार आया है किन्तु दोनों स्थान पर भिन्न अर्थ दे रहे हैं-

मनका - माला का दाना, मनका - मन की बात, फेर - चक्कर, फेर - घुमाना

यहाँ इन शब्दों के कारण काव्य पंक्तियों में चमत्कार आ गया है।

''जहाँ एक शब्द दो या अधिक बार आए किन्तु अर्थ भिन्न-भिन्न प्रकट करें, वहाँ यमक अलंकार होता है।''

ध्यान दीजिए-

(1) मंगल को देखि पट देत बार-बार हैं।

(2) जो रहीम गति दीप की, कुल सपूत गति सोय।।
बारे उजियारो लगै, बढ़े अँधेरो होय।

समझिए-

पहले उदाहरण में पट के दो अर्थ है- (क) वस्त्र, (ख) किवाड़ इस प्रकार इस पंक्ति का-

पहला अर्थ है- किसी याचक को देखकर बार-बार वस्त्र देना।

दूसरा अर्थ हुआ - किसी याचक को देखते ही दरवाज़ा बन्द कर लेना।

इसी प्रकार-

दूसरे उदाहरण में बारे तथा बढ़े शब्दों के भी दो-दो अर्थ है -

बारे - बचपन में, जलाने पर बढ़े - बड़ा होने पर, बुझने पर

''इस प्रकार जहाँ एक शब्द एक ही बार प्रयुक्त होता है, किन्तु उसके एक से अधिक अर्थ निकले, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।''

2. **निम्नलिखित काव्यांश में अलंकार पहचान कर लिखिए-**

अ- अंग-अंग तरंग उठे दुति की, परिहै मनो रूप अबै धर च्वै।

आ- साँझ ते भोर लौ तारनि ताकिबो, तारनि सौं इकतार न टारति

इ- मोहन-सोहन-जोहन की लगियै रहै आँखिन के उर आरति।

ई- तुम कौन धौ पाटी पढ़े हो लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं

3. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य प्रयोग कीजिए-

अनीति करना, हा-हा खाना, दुहाई करना, टेक लेना,

प्यासा मारना, बाँक न होना, मन लेना,

4. निम्नलिखित ब्रजभाषा के शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए-

पाँयनि, हिये, छके, सूधो, धौ,।

5. घनानंद और देव के छंदों में कौन-सा रस है? समझाकर स्पष्ट कीजिए।

- जहाँ प्रकृति के उपादानों के कार्य मनुष्यवत हो वहाँ मानवीकरण होता है। प्रकृति को मानव के रूप में व्यवहार करते दिखाना प्रकृति का मानवीकरण कहलाता है- जैसा कि - 'डार द्रुम पलना ..... चट कारी दे।' छंद में बसंत का वर्णन कवि ने मानवीकरण रूप में किया है।

योग्यता विस्तार

1. अपने क्षेत्र से सबंधित प्रेम और सौन्दर्य की अन्य कविताएँ खोजकर पढ़िए।
2. ब्रजभाषा में श्रीकृष्ण के प्रसंग पर सूरदास, मीरा और रसखान आदि कवियों के पद संकलित कीजिए।
3. प्रकृति के मानवीकरण के अन्य उदाहरण अपनी इसी पुस्तक से खोजकर लिखिए।

शब्दार्थ

भोर - प्रातः काल, सूधो - सीधी, कानन - उपवन, सयानप - चतुराई, तारनि सौं - पुतलियों से, नेत्रों से, बाँक - वक्रता, टेढ़ापन, ताकिबो - देखती है, आपनपौ - अपनापन, स्वाभिमान, तारनि - तारे , झिझकैं - झिझकते हैं,

भावती-मन भावन, निसांक-निशंक, निश्शंक, दीठि-दिखाई, दृष्टि, मन-हृदय, 40 सेर की तौल, औसर-अवसर, सोहन-मोहक, सुहावना, जोहन-देखना, आरति- लालसा, इच्छा, तात-मित्र , आनन-मुख, जिन-मत, उर-हृदय, अमोही-निष्ठुर, लट-बाल, कपोल-गाल, दोही-दुहाई, दुति-शोभा, बटोही-पथिक, जीवन मूल - जीवन के आधार, दई -दैव, नुपुर-घूँघरू, द्रुम-लता, मंजु-सुन्दर सुमन-फूल, कटि-कमर, छवि-शोभा, किरीट-मुकुट, केकी-मयूर, जुन्हाई-चाँदनी, कीर-तोता, कंजकली-कमलकली, रीझि-आकर्षित करना, थिरात-स्थिर रहना, भई - हो गई

* * *